मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

5 सितंबर 2024
मूल्य : 10.00 रुपये
पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532
मासिक जागरण पत्रिका

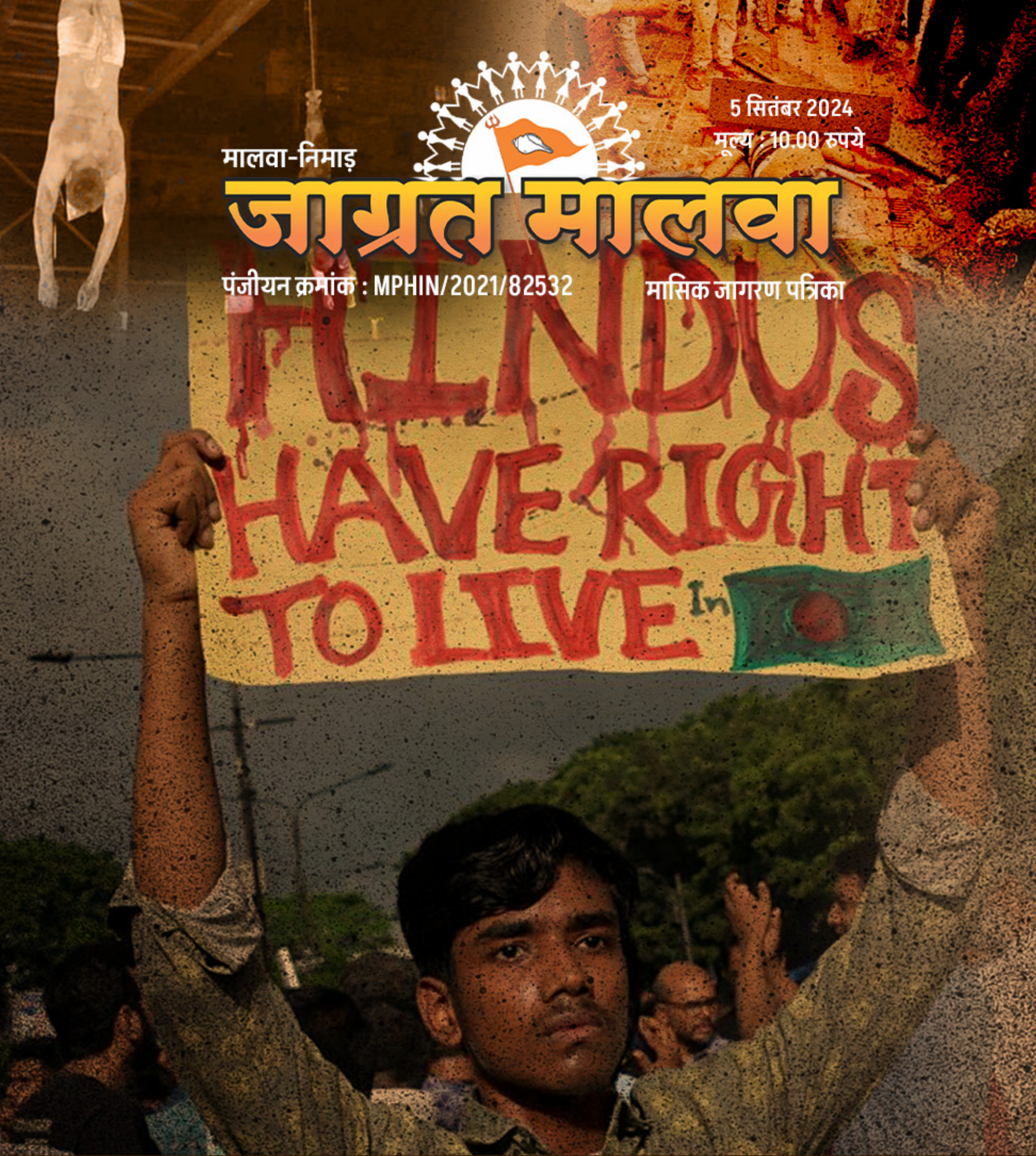

षडयंत्र की भेंट चढ़ा बांग्लादेश, कट्टरपंथियों ने किया तख्ता पलट, पूर्ण बहुमत से चुनी गई लोकतांत्रिक प्रधानमंत्री शेख हसीना को मात्र 45 मिनिट में छोड़ना पड़ा अपना देश, अल्प संख्यकों पर चुन- चुन कर किए गए हमले। सैकड़ों घर लूट लिए एवं कई निर्दोष लोगो की निर्मम हत्याएं की गई। दुनिया भर में घटना के विरोध में प्रदर्शन किया गया।

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पम्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्त्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

- HIGH PERFORMANCE CHIP
- MULTIPLE PROTECTION
- AUTOMATIC RECOGNITION
- LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
- PWN CHARGE
- SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

India : Toll Free No. 1800 103 5555

* नियम व शर्तें लागू

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 सितम्बर 2024 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 04 अंक : 04
•••
भाद्रपद शुक्ल
युगाब्द ५१२६

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
राकेश दांगी
राजेश सोनी
•••

मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
द्वितीय तल- अर्चना, 76
रामबाग इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341
•••
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी - विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं अर्चना भवन, 76 रामबाग, इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित।
संपादक अरुण सपकाले
फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

बांग्लादेश में हिन्दू अल्पसंख्यक समाज के साथ जो बर्बरता हुई वह अत्यन्त पीड़ादायक एवं आक्रोशित करने वाली है। कट्टरपंथी दंगाई सोच रखने वालों ने इस घटनाक्रम से यह सिद्ध कर दिया कि भारत में अल्पसंख्यक कितने भी सुरक्षित हों लेकिन मुस्लिम देशों में हिन्दू सुरक्षित नहीं हैं।

बांग्लादेश में वर्तमान समय में हिन्दुओं की स्थिति अत्यंत दयनीय है। जिहादी उन्हें ढूंढ-ढूंढ कर अपना निशाना बना रहा है। ऐसी हालत में हिन्दुओं के पास विकल्प है कि या तो हिन्दुओं को भारत में विलय की माँग करना चाहिये या भारत को इन प्रताड़ित हिन्दुओं को हमारे देश में शरण देना चाहिए। एक तीसरा विकल्प और है जो बांग्लादेश के हिन्दुओं ने किया। हिन्दुओं को एक जुट होकर जिहादियों को अपनी शक्ति का आभास करवाना चाहिये। यह तीसरा विकल्प दुनियाभर में मुस्लिम देशों में रह रहे हिन्दुओं के लिये प्रेरणा देने वाला रहेगा।

बांग्लादेश की घटना एक सोची-समझी साजिश थी यहाँ एक तीर से दो निशाने साधे गए। आरक्षण के आंदोलन को हवा देकर इसकी आड़ में युवाओं के कंधे पर बंदूक रखकर जिहादियों ने हिन्दुओं को निशाना बनाया जबकि इस आरक्षण के आन्दोलन से हिन्दुओं का कोई लेना-देना ही नहीं था। जिस जिहादी सोच ने 1947 में भारत को लहूलुहान किया था उसी को बांग्लादेश में पुनः दोहराया गया है। यह ऐसा देश है जो इसके जनक शेख मुजीब का नहीं हुआ वह हिन्दुओं का भी नहीं हो सकता। शेख हसीना का तख्तापलट भारत के लिए शुभ संकेत नही है। सेना द्वारा सत्ता हथियाना पाकिस्तान और चीन के इशारे पर हुआ है। चीन और पाकिस्तान दोनों ही भारत के प्रति विरोध की भावना रखते हैं। इन सब समस्याओं का एक ही सशक्त निदान है कि हिन्दू समाज को वो भारत में रहते हों या किसी भी मुस्लिम देशों में, अपनी जाति-पाति का बन्धन तोड़कर एक हिन्दू के नाते अपनी संगठित शक्ति का उपयोग कर अपनी सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना होगा।

संगठित शक्ति से ही इन जिहादी मानसिकता वालों से निपटा जा सकता है। **संघे शक्ति कलियुगे** - आइये इस युक्ति को हम साकार करें।

बांग्लादेश हिन्दू नरसंहार : भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया

चंद्रभूषण बारोट

बांग्लादेश, जो 1971 में पाकिस्तान से स्वतंत्र हुआ, एक धर्मनिरपेक्ष देश के रूप में स्थापित हुआ था। हालांकि, हाल के वर्षों में बांग्लादेश में धार्मिक अल्पसंख्यकों, विशेष रूप से हिंदुओं, के खिलाफ उत्पीड़न की घटनाएं बढ़ी हैं। इस आलेख में हम बांग्लादेश में हिंदुओं के नरसंहार पर भारतीय सरकार की भूमिका और विदेश की भूमिका पर विचार करेंगे।

बांग्लादेश में हिंदुओं का उत्पीड़न एक परिप्रेक्ष्य- बांग्लादेश में हिंदुओं की स्थिति समय-समय पर विवादों का केंद्र रही है। बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यक समाज 1971 की स्वतंत्रता के बाद से विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रहा है। धार्मिक असहमति और राजनीतिक अस्थिरता के कारण हिंदुओं को कई बार हिंसा और उत्पीड़न का सामना करना पड़ा है।

❖ **हिंसा और हमलों की घटनाएं -** पिछले कुछ वर्षों में बांग्लादेश में हिंदू मंदिरों, पूजा स्थलों और हिंदू बहुल गांवों पर हमलों की कई घटनाएं सामने आई हैं। विशेष रूप से, दुर्गा पूजा के दौरान और अन्य धार्मिक समारोहों के समय पर ऐसी घटनाएं बढ़ गई हैं। इस तरह के हमले धार्मिक कट्टरपंथियों द्वारा किए जाते हैं और इन्हें सामाजिक और राजनीतिक अस्थिरता का एक हिस्सा माना जाता है।

❖ **संपत्ति और अधिकारों का हनन -** हिंदू समुदाय के लोगों की संपत्ति पर भी हमला किया जाता है। उनके घरों, खेतों और व्यापारिक प्रतिष्ठानों को लक्षित किया जाता है। यह उनके अधिकारों का हनन करने और उन्हें आर्थिक और सामाजिक रूप से कमजोर करने का प्रयास होता है।

❖ **राजनीतिक और सामाजिक स्थिति-** बांग्लादेश की राजनीति में धार्मिक उन्माद और कट्टरपंथ का प्रभाव भी देखा जा सकता है। कई बार राजनीतिक दल और नेता अपने राजनीतिक लाभ के लिए धार्मिक भावनाओं को उकसाते हैं, जिससे अल्पसंयकों को संकट का सामना करना पड़ता है।

भारतीय सरकार की भूमिका - भारतीय सरकार ने बांग्लादेश में हिंदुओं के नरसंहार और उत्पीड़न की घटनाओं पर चिंता जताई है। इसके विभिन्न पहलुओं को निनलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है-

❖ **कूटनीतिक दबाव-** भारत ने बांग्लादेश सरकार पर कूटनीतिक दबाव डाला है, ताकि बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के खिलाफ होने वाली हिंसा को रोका जा सके। विभिन्न उच्च स्तरीय बैठकों और संवादों में भारत ने बांग्लादेश सरकार से अल्पसंख्यक अधिकारों की सुरक्षा की मांग की है।

❖ **मानवीय सहायता-** भारत ने बांग्लादेश में हो रहे संकट के दौरान मानवतावादी सहायता प्रदान की है। भारत ने बांग्लादेश में हिंदू शरणार्थियों को मदद और सुरक्षा प्रदान की है और उनके पुनर्वास के प्रयासों में सहयोग किया है।

❖ **अंतर्राष्ट्रीय मंच पर आवाज़ उठाना -** भारतीय सरकार ने अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भी बांग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ हो रही हिंसा का मुद्दा उठाया है। यह अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को स्थिति से अवगत कराने और बांग्लादेश सरकार पर दबाव डालने के प्रयास का हिस्सा है।

विदेश की भूमिका - अंतर्राष्ट्रीय समुदाय, विशेषकर पश्चिमी देशों और मानवाधिकार संगठनों ने भी बांग्लादेश में अल्पसंयक समुदायों के अधिकारों के उल्लंघन पर ध्यान आकर्षित किया है। उनकी भूमिका निम्नलिखित बिंदुओं में समझी जा सकती है-

❖ मानवाधिकार रिपोट- विभिन्न मानवाधिकार संगठनों ने बांग्लादेश में हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों के खिलाफ हो रहे उत्पीड़न की रिपोर्ट प्रकाशित की है। इन रिपोर्टों में हिंसा की घटनाओं का विवरण और अल्पसंख्यक समुदायों के अधिकारों के उल्लंघन की जानकारी दी गई है।

❖ **दात्री सहायता और दबाव-** कई देशों ने बांग्लादेश सरकार पर दबाव डाला है कि वह अल्पसंख्यक समुदायों के खिलाफ हिंसा को रोकने के लिए ठोस कदम उठाए। इसके अलावा, दात्री संगठनों ने बांग्लादेश में प्रभावित समुदायों के लिए सहायता प्रदान की है।

❖ **अंतर्राष्ट्रीय दबाव और बहुपरकारी प्रयास-** अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और अन्य देशों ने बांग्लादेश में धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिक न्याय की दिशा में प्रयासों को समर्थन दिया है। वे बांग्लादेश की सरकार को ऐसे सुधारात्मक कदम उठाने की सलाह देते हैं जो अल्पसंख्यक समुदायों की सुरक्षा और उनके अधिकारों की रक्षा कर सकें।

निष्कर्ष - बांग्लादेश में हिंदुओं के नरसंहार और उत्पीड़न की घटनाएं एक गंभीर चिंता का विषय हैं। भारतीय सरकार और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने इस मुद्दे पर अपनी-अपनी भूमिका निभाई है। भारतीय सरकार ने कूटनीतिक, मानवीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर इस मुद्दे को उठाया है, जबकि विदेश ने भी दबाव और सहायता के माध्यम से इस स्थिति पर ध्यान दिया है। हालांकि, इस समस्या का स्थायी समाधान केवल बांग्लादेश की सरकार द्वारा अल्पसंख्यक समुदायों के अधिकारों की सुरक्षा और हिंसा के खिलाफ ठोस कदम उठाने से ही संभव होगा। यह अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की जिमेदारी भी है कि वह इस मुद्दे पर ध्यान बनाए रखे और बांग्लादेश को उचित दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करे।

आंदोलन की आड़ में हिन्दू-विरोध का खेल

दुर्गेश कुमार साध

बांग्लादेश में छात्रों की आड़ में जो मतांधता का जो उपक्रम चल रहा है, उसे पूरा विश्व देख भी रहा है और इसके पीछे छुपे हुए मंतव्यों को समझने का प्रयास भी कर रहा है। 1971 में मारे गए लोगों के परिवारों को प्रदान किए गए आरक्षण के मुद्दे पर बांग्लादेश के लाखों छात्र सड़कों पर प्रदर्शन के लिए उमड़ पड़े एवं जिस प्रकार से उन्होंने वहाँ की लोकतांत्रिक प्रक्रिया से निर्वाचित प्रधानमंत्री शेख हसीना को पदच्युत होने पर मजबूर कर दिया, उससे एक बात तो स्पष्ट है कि यह मात्र छात्रों का आंदोलन नहीं हो सकता, बल्कि इसे बांग्लादेश के कठमुल्लाओं, कट्टर अतिवादी राजनेताओं एवं सेना का पूरा समर्थन प्राप्त है।

दरअसल, यह पूरा षड्यंत्र छात्रों के कंधों पर बंदूक रखकर अतिवादी कट्टरपंथियों द्वारा चलाया जा रहा है। जिस तरह से भीड़ के नाम पर वहाँ के हिन्दू मंदिरों एवं हिन्दू नागरिकों को चुन-चुन कर निशाना बनाया जा रहा है, उससे यह स्पष्ट है कि ऐसी घटनाएँ भीड़ के ज़रिये वहाँ के मुस्लिम रहवासियों के मन में हिन्दुओं के प्रति दशकों से जमे आक्रोश एवं नफ़रत की एक बानगी-भर है। विश्व में अपनी छद्म धर्म-निरपेक्षता के मुखौटे के पीछे हिन्दुओं को प्रत्यक्ष रूप से नुकसान पहुँचाना कठिन है, इसलिए अब बांग्लादेश से हिन्दुओं के ख़ात्मे के लिए भीड़-तंत्र का सहारा लिया जा रहा है, वर्ना वहाँ न तो वह आरक्षण हिन्दुओं ने लागू किया था और न ही वे इस आरक्षण के लाभार्थी थे, फिर क्यों अल्पसंख्यक हिन्दुओं को मारा जा रहा है, क्यों हिन्दू महिलाओं का बलात्कार किया जा रहा है? मुस्लिम कट्टरपंथियों की नफ़रत का यह आलम है कि बड़ी-बड़ी हिन्दू सेलिब्रिटीज तक को भी बक्शा नहीं जा रहा। बांग्लादेशी क्रिकेटर लिटन दास के घर पर भी हमला किया गया, वहीं राहुल आनंद नामक गायक को भी नहीं बक्शा। अभी लगभग 27 ज़िलों से हिंदू विरोधी घटनाएँ सामने आ चुकी हैं, 30 मंदिरों में देवी-देवताओं की मूर्तियाँ तोड़ी गई हैं और 4 मंदिरों को जलाया जा चुका है।

आज हिन्दुओं की स्थिति ऐसी है कि वे पाकिस्तान में मारे जा रहे हैं, बांग्लादेश में प्रताड़ित किये जा रहे हैं और अफगानिस्तान में तो लगभग समाप्त ही हो चुके हैं। ये तीनों ही देश एक समय अखण्ड भारत का हिस्से थे, जो मजहबवाद ने हमसे छीन लिये। इन 3 देशों की बनिस्बत भारत के अन्य पड़ौसी देशों में हिन्दुओं की ऐसी दयनीय स्थिति नहीं है, क्योंकि वे मुस्लिम देश नहीं है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि मुस्लिम देश अपने देश में किसी भी हिंदू को बर्दाश्त नहीं करना चाहते। बांग्लादेश के वर्तमान हालातों के कारण निश्चित तौर पर हिन्दुओं का वहाँ से पलायन होगा और उन्हें अपने देश भारत में शरण लेनी होगी। इसी बात को ध्यान में रखते हुए केंद्र की भाजपा सरकार नागरिकता संशोधन अधिनियम लेकर आई थी, जिसमें मुस्लिम देशों से प्रताड़ित होकर आने वाले हिन्दुओं को आसानी से भारतीय नागरिकता प्रदान की जा सके, मगर इस देश के मुसलमानों ने उसका यह कहकर विरोध किया था कि उसमें मुस्लिमों को शामिल क्यों नहीं किया गया! जबकि मुस्लिम देश में कोई मुस्लिम भला क्योंकर प्रताड़ित होगा और हुआ भी तो उसे भारत में ही क्यों शरण लेनी है? इस बात को लेकर दिल्ली में मुस्लिमों ने लगभग 101 दिनों तक नेशनल हाईवे को बंद करके रखा और छद्म विक्टिम कार्ड का खेल खेलते रहे।

भारत में भी लगातार कई बांग्लादेश और पाकिस्तान बनने लगे हैं और आज जिस स्थिति से बांग्लादेश गुज़र रहा है, वह स्थिति भारत में कभी भी बन सकती है। हमारे देश की सीमाओं से लगे मुस्लिम देशों से लगातार घुसपैठ की जा रही है, जिन्हें स्थानीय लोगों एवं राज्य सरकारों का भी वरदहस्त प्राप्त है। बांग्लादेश और पाकिस्तान की सीमाओं से लगे जिलों की डेमोग्राफी तेज़ी से बदलती जा रही है और मुस्लिम आबादी लगातार बढ़ती जा रही है, जो कि आंतरिक सुरक्षा के लिए बेहद ख़तरनाक है। सरकार को इस विषय में कारगर कदम उठाना ही होंगे।

नाम बदल गए, लेकिन अत्याचार नहीं रुका....

बांग्लादेश में तख्तापलट हो गया। आरक्षण विरोधी छात्र आंदोलन ने आखिरकार पीएम शेख हसीना की गद्दी छीन ली। देश में मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार कार्यभार संभाल चुकी है। बांग्लादेश की मौजूदा हालात को लेकर साल 1971 जैसी स्थिति नजर आती है। भले ही आंदोलन छात्रों द्वारा किया गया हो, लेकिन उन छात्रों का विरोध इस तरह रूप नहीं ले सकता। अब इसके पीछे साजिश है, या फिर इन लोगों को किसी का समर्थन प्राप्त है, यह बातें अपनी जगह है परंतु बांग्लादेश की आम जनता की इसमें क्या गलती है?

बांग्लादेश में तख्तापलट के बाद से हिंदुओं पर जानलेवा हमले हो रहे हैं। चाहे सिलहट हो या खुलना, बरिसल चटगांव, राजशाही, ढाका और मेमनसिंह डिवीज़न, सभी जगह हिंदू या तो घर में कैद हैं या अपनी जान बचाकर वहां से भाग रहे हैं। हिंसक भीड़ हिंदू बहुल इलाकों में आतंक मचा रही है। यह सब छात्र अकेले नहीं कर सकते। 1971 में भारत की मदद से अस्तित्व में आने के बाद पूर्वी पाकिस्तान भले ही **बांग्लादेश** हो गया लेकिन हिंदुओं के खिलाफ अत्याचार बदस्तूर जारी है। भारत में रहने वाले बांग्लादेशी हिंदू आज भी उस दर्द से गुजरते हैं जब 1965 में, भारत-पाकिस्तान की जंग के वक्त पूर्वी पाकिस्तान में अपने बसे-बसाए संसार को छोड़कर उन्हें दर-दर भटकना पड़ा था। मौजूदा हालातों को देखें तो बांग्लादेश की कुल आबादी लगभग 16.51 करोड़ है, जिनमें 7.90 प्रतिशत हिंदू है। 2011 में यह 8.54 प्रतिशत थे। देश में मची इस अफरा तफरी से सड़कों पर अराजकता है। ऐसे में वहां पर हमलावरों के निशाने पर अल्पसंख्यक हिंदू है। कई मंदिरों में आगजनी की घटनाएं सामने आ रही हैं। लगातार कट्टरपंथी आंदोलन के नाम पर हिंदुओं पर अत्याचार कर रहे हैं। न सिर्फ मंदिरों में तोड़फोड़ हो रही है बल्कि हिंदू परिवारों को धमकाने के साथ-साथ उनके घरों को आग भी लगा दी गई है।

हिंदू निशाने पर क्यों? - बांग्लादेश में आरक्षण को लेकर शुरू हुआ आंदोलन हिंसा में तब्दील हो चुका है। बांग्लादेश में जगह-जगह पर हिंदू मंदिरों और हिंदू समुदाय पर हमले की खबरें आ रही हैं। देश के इस सत्ता संकट के बाद अब वहां रह रहे हिंदुओं के अस्तित्व संकट मंडराने लगा है। देश के कट्टरपंथियों को अचानक नई शक्ति मिल गई है और इस शक्ति के शिकार हो रहे हैं वे हिंदू समुदाय, जो बांग्लादेश में किसी तरह से अपना जीवन गुजर रहे थे। अत्याचार से पीड़ित देश के हिंदू परिवारों के जो वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो चुके हैं, उससे बांग्लादेश के कट्टरपंथ वाले नए रूप का प्रमाण नजर आ रहा है। यहां तक की वहां के इस्कॉन और काली मंदिर पर भी हमले हुए हैं, जिसके बाद हिंदुओं को जान बचाने के लिए छिपना पड़ रहा है। राजधानी ढाका में स्थित भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में तोड़फोड़ भी हुई है। मेहरपुर (खुलना डिविजन) के एक केंद्र को भगवान जगन्नाथ, बलदेव और सुभद्रा देवी की मूर्तियों के साथ जला दिया गया। हालांकि हिंदुओं पर यह अत्याचार नए नहीं हैं। देश विभाजन के बाद से लगभग 50 लाख हिंदू पलायन करने को विवश हुए हैं। हिंदुओं का पलायन उसके बाद भी थमा नहीं। बांग्लादेशी

साहित्यकार सलाम आजाद ने अपनी पुस्तक, **बांग्लादेश से क्यों भाग रहे हैं हिंदू?** में लिखा है कि कट्टरपंथी मुस्लिम संगठनों के अत्याचार से तंग आकर 1974 से 1991 के बीच रोज औसतन 475 हिन्दू बांग्लादेश छोड़ने को बाध्य हुए। सांप्रदायिक उत्पीड़न, सांप्रदायिक हमले, नौकरियों में भेदभाव जैसे कई कामों के कारण बांग्लादेश में हिंदुओं की स्थिति बद से बदतर होती गई है। बांग्लादेश में कभी 20% से अधिक हिंदू हुआ करते थे, लेकिन आज उनकी संख्या महज 7 से 8 % रह गई है। इसलिए यहां यह कहना गलत नहीं होगा कि बांग्लादेश की अंतरिम सरकार में कट्टरपंथी ताकतों की भागीदारी के आसार देखते हुए, वहां हिंदुओं का भविष्य और खतरे में जा रहा है। ऐसे में वो ये भी भूल गए हैं कि उनका राष्ट्र भारत से ही जन्मा है।

साल 2024 के जनवरी में हुए चुनाव में जीतकर पांचवीं बार बांग्लादेश की प्रधानमंत्री बनीं शेख हसीना के लिए कई महीने अच्छे नहीं रहे। पहले चुनाव में धांधली का आरोप लगा, फिर कोटा सिस्टम को लेकर हफ्तों तक प्रदर्शन और आखिरकार शेख हसीना

के इस्तीफे की मांग। प्रदर्शनकारियों के आगे शेख हसीना को झुकना पड़ा, इस्तीफा देना पड़ा और इसके साथ ही उन्हें अपना मुल्क भी छोड़ना पड़ा। वही मुल्क जहां की सत्ता में 15 साल से शेख हसीना काबिज थीं। इन्हीं 15 वर्षों में भारत और बांग्लादेश के बीच जो संबंध स्थापित हुए हैं, उससे भारत के पड़ोसी देशों को दिक्कतें हुई हैं जिसके चलते अंततः वह समय दूर नहीं जब अन्य पड़ोसी देशों की तरह बांग्लादेश भी विश्व की किसी महाशक्ति के हाथों की कठपुतली बनकर रह जाएगा।

क्या होगा अब बांग्लादेश का भविष्य? - भारत के चारों ओर के नक्शे को देखें तो आप पाएंगे की भूगोल ने हमें कितने बदहाल पड़ोसियों से नवाजा है। एक बेहद अशांत पड़ोस, जो कट्टरपंथियों, सैन्य शासकों, दिवालिया अर्थव्यवस्थाओं और जलवायु परिवर्तन के कारण डूबते देशों से भरा है। सवाल यह है कि अब हिंदुओं के साथ बांग्लादेश में क्या होगा, जिन कट्टरपंथियों ने बांग्लादेश का निर्माण करने वाले शेख मुजीबुर रहमान की मूर्तियों तक को नहीं छोड़ा वह हिंदुओं के साथ कैसा बर्ताव करेंगे? विरोध प्रदर्शन करने वाले ज्यादातर युवा हैं, वे युवा जिनके दिमाग में हिंदुओं के खिलाफ नफरत का जहर भर दिया गया है। जब देश का भविष्य कहलाए जाने वाली युवा पीढ़ी की इस तरह की मानसिकता है, तो ऐसी स्थिति में बांग्लादेशी हिंदुओं के लिए चिंता और भी बड़ी हो जाती है। मौजूदा समय में बांग्लादेश के हिंदुओं के पास तीन ही रास्ते हैं... या तो वे आत्महत्या कर लें या धर्म परिवर्तन कर लें यह पलायन कर जाएं। वर्ष 1971 में स्वतंत्र राष्ट्र बांग्लादेश का उदय पाकिस्तान के अकथ्य अत्याचार का परिणाम था। इस तरह की घटनाओं से यह साबित होता है कि धर्म के आधार पर राष्ट्र-राज्य के निर्माण का सिद्धांत निरर्थक है। अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो की नीति उस सिद्धांत के मूल में थी। मौलाना अब्दुल कलाम आजाद ने 1912 में अपने उर्दू साप्ताहिक **अल हिलाल** में मुसलमानों को गैर-इस्लामिक परंपरा त्यागने को कहा था। उन्होंने लिखा, 'यदि मजहब के कारण लड़ाइयां हो रही हैं, तो इसका मतलब है कि मजहब के अनुयायियों ने उसे समझने में गलती की है।' किसी भी लोकतंत्र में, जनता को सरकार से सवाल करने का पूरा अधिकार होता है, परंतु धर्म जातियों के नाम पर, हिंसक गतिविधियों को बढ़ावा देने का अधिकार नहीं है। बांग्लादेश के कट्टरपंथी 1971 के विभाजन से ही सबक लेते कि किसी देश के बहुसंख्यकों द्वारा अपने अल्पसंख्यकों के साथ समानता का व्यवहार नहीं किए जाने पर उसका अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाता है। अगर यह सबक बांग्लादेश ने लिया होता, तो रवींद्रनाथ टैगोर के शब्द, **आमार सोनार बांग्ला** आज सांप्रदायिकता की आग में नहीं झुलस रहे होते।

बांग्लादेश मे हिंदुओं पर अत्याचार की सत्य कथा - 1

फिरोजपुर जिले के रैय्यरकाथी इलाके मे भी भय का वातावरण था। जिहादी दंगाई कब किस ओर से आ जाएं, कुछ पता नहीं था। यहां रहने वाले सारे हिंदु, अंदर तक डरे हुए थे। दंगाई समूह में आ रहे थे। वे हिंदुओं को पहले चारों ओर से घेरते और फिर मारपीट, लूटपाट और बलात्कार का नृशंस खेल चालू हो जाता। ऐसी खबरें जब सुनाई देतीं, तो मन अंदर तक हिल जाता था। लोग अपनी माता, बहन, बेटियों की लाज बचाने को लेकर घबराए हुए थे। रात का समय था, किन्तु आंखों में नींद नहीं थी। सभी का मन किसी भयानक आशंका से घबरा रहा था। दूर से आते हुए **नाना ए तकबीर- अल्ला हु अकबर** का नारा लगाती भीड़ के शोर ने, उस आशंका को और निश्चित कर दिया। दंगाइयों का शोर और निकट आता हुआ लग रहा था। देखते ही देखते चारों तरफ से हाथों में हथियार लहराते हुए, जिहादी दंगाई आ पहुंचे। आते ही उन्होंने तोड़-फोड़ करना प्रारंभ कर दिया, जो भी हिंदू सामने आता, वे उन्हें मार रहे थे। मारपीट और तोड़-फोड़ करने के अलावा उनके विशेष निशाने पर थी हिंदू स्त्रियाँ। अचानक इस भीड़ में से कुछ लोग, एक घर में घुसे। घर में घुसते ही उन्होंने, भयंकर तोड़-फोड़ करना प्रारंभ कर दिया। घर के लोग जहां संभव हो सका था, छुप गए थे। लेकिन छुपना इतना सरल भी नहीं था। इस घर की एक स्त्री, जैसे ही हाथों में आई, उसे पकड़कर एक कमरे में ले जाया गया और उन सारे दानवों ने, एक के बाद एक उस हिंदू महिला के साथ बलात्कार किया। जब वे सारे हैवानियत की भी हदें पार कर चुके, तो आखिर में उसके मुंह पर कपड़ा बांधकर उसी हालत में उसे पटक दिया।

बाद मे जैसे ही घर के दूसरे लोग उनके सामने आए, निर्दोष हिंदुओं ने उन्हें छोड़ देने के लिए याचना की। उस परिवार ने अपनी सारी जमा पूंजी, सोने-चांदी के आभूषण, उन राक्षसों के पैरों में रख दी और हाथ जोड़कर उन्हें अपने हाल पर छोड़ देने के लिए याचना की। शायद इस घर में जेहादियों के लिए इतना काफी था, अभी और भी घर थे, और भी स्त्रियां थीं, जहां उन्हें अपनी हैवानियत को अंजाम देना था। उस घर से सब कुछ लूटकर वे बाहर निकल गए। ऐसे ही उस पूरे मोहल्ले में, अलग-अलग जेहादी टोलियाँ, कितने ही घरों में वहां की मां, बहन, बेटियों की लाज को तार-तार करते, लूट-पाट कर रहे थे, जिसकी कोई गिनती नहीं है।

बांग्लादेश में सत्ता संघर्ष: हसीना की सरकार के पतन के बाद राजनीतिक अस्थिरता

ध्रुवराज शर्मा

बांग्लादेश में वर्तमान समय में राजनीतिक माहौल बेहद अस्थिर हो गया है। शेख हसीना की सरकार के पतन के बाद देश में सत्ता के लिए कड़ा संघर्ष चल रहा है। प्रमुख राजनीतिक ताकतें जैसे बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी), जमात-ए-इस्लामी और सेना, सत्ता हासिल करने के लिए प्रयासरत हैं।

बांग्लादेश में 1991 में वेस्टमिंस्टर प्रणाली पर आधारित संसदीय प्रणाली अपनाई गई थी। इससे पहले, 1975 से 1990 के बीच देश ने सैन्य शासन का अनुभव किया था। 1990 में लेफ्टिनेंट जनरल हुसैन मुहम्मद इरशाद के इस्तीफे के बाद दो प्रमुख राजनीतिक दल, बीएनपी और अवामी लीग (एएल) उभरे। इन दलों की मांग पर पहली बार एक तटस्थ कार्यवाहक सरकार का गठन हुआ था ताकि लोकतांत्रिक चुनाव कराए जा सकें।

शेख हसीना के शासन के पतन का मुख्य कारण छात्रों द्वारा शुरू किया गया एक बड़ा आंदोलन था। बांग्लादेश में छात्र राजनीति का इतिहास मुक्ति आंदोलन से जुड़ा हुआ है, और देश की राजनीति में छात्रों की भूमिका हमेशा से ही महत्वपूर्ण रही है। लगभग सभी प्रमुख राजनीतिक दलों की छात्र शाखाएँ सक्रिय हैं।

शेख हसीना के अंतिम दिनों में देश में अराजकता का माहौल बन गया। लाखों लोग उनके खिलाफ सड़कों पर उतर आए और अंततः एक अंतरिम सरकार का गठन किया गया, जिसका नेतृत्व नोबेल शांति पुरस्कार विजेता मोहेमद यूनुस कर रहे हैं। इस सरकार का मुेय कार्य देश में स्थिरता और कानून व्यवस्था को बहाल करना होगा।

मोहम्मद युनुस बांग्लादेशी उद्यमी, बैंकर, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ और नागरिक समाज के नेता है, जो अगस्त 2024 से बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार के रूप में कार्य कर रहे हैं। यूनुस को ग्रामीण बैंक की स्थापना और माइक्रोक्रेडिट और माइक्रोफाइनेंस की अवधारणाओं को आगे बढ़ाने के लिए 2006 में नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। यूनुस को अमेरिका सहित कई अन्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मान मिले हैं। उन्होंने 2009 में यूनाइटेड स्टेट्स प्रेसिडेंशियल मेडल ऑफ़ फ्रीडम और 2010 में कांग्रेसनल गोल्ड मेडल प्राप्त किया। यूनुस उन सात व्यक्तियों में से एक हैं जिन्हें नोबेल शांति पुरस्कार, यूनाइटेड स्टेट्स प्रेसिडेंशियल मेडल ऑफ़ फ्रीडम और यूनाइटेड स्टेट्स कांग्रेसनल गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया है।

हालांकि, कुछ लोगों का मानना है कि सैन्य समर्थित अंतरिम सरकार का शासन लंबा चल सकता है। बांग्लादेश की सेना ने अतीत में राजनीति में हस्तक्षेप किया है और देश पर सीधे शासन भी किया है, लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि सेना अब सीधे सत्ता में आने में रुचि नहीं रखती। पिछले सैन्य शासन ने उसकी सार्वजनिक छवि को काफी नुकसान पहुंचाया है।

भारत की पूर्व उच्चायुक्त रीवा गांगुली दास के अनुसार, जब तक कानून और व्यवस्था को नियंत्रण में लाने के लिए कोई ठोस योजना नहीं बनती, तब तक सेना की भूमिका महत्वपूर्ण बनी रहेगी।

बांग्लादेश में सत्ता के लिए संघर्षरत राजनीतिक दलों के बीच मतभेद बहुत गहरे हैं। इसमें हसीना की सरकार को गिराने में शामिल छात्र आंदोलन से लेकर इस्लामवादी राजनीतिक दल तक शामिल हैं। ये मतभेद बांग्लादेश के पुनर्निर्माण और राजनीतिक स्थिरता की दिशा में किसी भी प्रकार के सहयोग को चुनौतीपूर्ण बना सकते हैं।

नई अंतरिम सरकार से यह उम्मीद की जा रही है कि वह देश में हो रहे दमन को समाप्त करेगी और निष्पक्ष चुनाव कराकर सत्ता का लोकतांत्रिक हस्तांतरण सुनिश्चित करेगी।

बांग्लादेश मे हिंदुओं पर अत्याचार की सत्य कथा - 2

बांग्लादेश के मेहरपुर में इस्कॉन का एक कृष्ण मंदिर है। मंदिर मे एक ब्रह्मचारी पुजारी, नियमित रूप से पूजन करते हैं। वे वर्षों से यहाँ रह रहे हैं। अपनी रुचि और आध्यात्मिक पिपासा के अनुरूप उन्होंने वहाँ कई ग्रंथ संग्रहीत कर रखे थे। इन ग्रंथों मे कुछ तो ताड़पत्रों पर लिखी मूल टीकाएं भी थीं। 5 अगस्त के पहले मंदिर में किसी भी आशंका से अनभिज्ञ लगभग 16 संन्यासी वहाँ रह रहे थे। अचानक तख्तापलट का समाचार आया और हिंदुओं पर आक्रमण की खबरों से वातावरण में तनाव पसर गया। अधिक समय नहीं बीता था कि मेहरपुर में भी, मुस्लिम कट्टरपंथी जेहादियों ने उत्पात मचाना प्रारंभ कर दिया। धीरे-धीरे ये दंगाई सैकड़ों के हुजूम में बदल गए। उनके रास्ते में जो भी हिंदू आते, वे उन्हें मारते चले जा रहे थे। इलाके के मुट्ठी भर हिंदू, अपने घरों में दुबक कर बैठ गए। लेकिन कुछ लोगों ने सुरक्षा की दृष्टि से मंदिर में एकत्रित होने का विचार किया और वे सारे इस्कॉन मंदिर में जा कर एकत्रित हो गए। किन्तु जैसा उन्होंने सोचा था, परिस्थिति उससे भी ज्यादा भयावह थी। जैसे ही जिहादियों की भीड़ को यह पता चला कि कई हिंदू मंदिर में जाकर इकट्ठा हो गए हैं, उन्होंने अपना रुख मंदिर की ओर कर लिया। जेहादी दंगाइयों के पास तलवारें, बंदूकें और ग्रेनेड भी थे। साफ था कि ये सब योजनाबद्ध हो रहा था। दंगाइयों का शोर बढ़ता जा रहा था। मंदिर की ओर बढ़ते हजारों दंगाइयों से सामना करना संभव नहीं था, इसलिए मंदिर में रुके हिंदुओं ने समय रहते वहाँ से निकल भागने मे ही भलाई समझी और पीछे के रास्ते से बच कर निकल गए। किन्तु सभी इतने भाग्यशाली नहीं थे। बाद में आए कुछ लोगों के पास इतना अवकाश ही नहीं बचा कि वे भाग सकें। चारों ओर से मुस्लिमों ने घेराबंदी कर दी थी।

मंदिर के बाहर एक गहरा कुंआ बना है। मंदिर में बच गए हिंदुओं ने जब देखा कि दंगाई बहुत निकट आ चुके हैं, तो वे टीन का एक टुकड़ा और छाता ले कर उस कुएं में ही कूद पड़े। कुएं में थोड़ा पानी होने के कारण वे घायल तो हुए, किन्तु उनकी प्राण रक्षा हो गई। कुछ ही क्षणों में मुस्लिम दंगाई मंदिर में घुस चुके थे। वहाँ उन्होंने तोड़-फोड़ और आगजनी करना प्रारंभ कर दिया। भगवान की मूर्तियों को तोड़ा गया, चित्रों को जला दिया गया। सैकड़ों वर्ष पुरानी पुस्तकों को और ताड़पत्र पर लिखे हुए मौलिक ग्रंथों को भी जला दिया गया। विस्फोट कर के मंदिर की दीवार को गिराने का भी प्रयत्न किया गया। उन्मादी भीड़, अपना काम कर के निकल गई। लगभग आधी रात के बाद मंदिर वापिस पहुंचे हिंदुओं ने कुएं से अपने बंधुओं को निकाला। वे जीवित निकल तो आए थे, लेकिन मृत्यु का संकट अभी भी उनके सरों से टला नहीं था। अभी भी वे संकट के साये मे ही जीने के लिए विवश हैं।

बांग्लादेश मे हिंदुओं पर अत्याचार की सत्य कथा - 3

पंचगढ़ की मौसमी दास, अपने आस-पास होने वाली हिंदू नरसंहार की भयावह घटनाओं से भयभीत थी। चारों तरफ से बुरी खबरें आ रही थीं। हिंदुओं के घर, दुकान जलाए जा रहे थे। मंदिर तोड़े जा रहे थे और जिहादियों की भीड़ उन बस्तियों पर हमला कर रही थी, जहां पर हिंदू रहते थे। महिलाओं को तो जैसे, घरेलू सामान की तरह लूटा जा रहा था। मौसमी का मायका, नोआखाली में है, वहां से भी लगातार दर्दनाक खबरें आ रही थीं। भयंकर आगजनी और लूट के बाद कई घरों से हिंदू लड़कियों को अपहरण करके ले जाया गया था। उनमें से कई लड़कियों की लाशें मिलीं और कइयों का पता भी नहीं चला कि उन्हें मार डाला गया या बंधुआ गुलाम बनाकर रख लिया गया। यह सब सुनकर मौसमी का दिल भी बैठा जा रहा था। मौसमी ही नहीं, वहां रहने वाले और हिंदू परिवारों की भी यही स्थिति थी। किसी की हिमत नहीं थी कि कोई बाहर जाकर कुछ खरीद ले।

हिंसा की खबरें अब भी आ रही थीं। बाहर निकलना अभी भी खतरे से खाली नहीं था। लोगों की रसोई में सामान खत्म हो चुका था, अब वे केवल नमक के साथ चावल उबालकर खा रहे थे। चावल भी इतने नहीं बचे थे कि दो समय का भोजन बन सके। इसलिए सभी परिवारों ने तय किया, वे देर दोपहर खाना खाएंगे, ताकि रात को भूख ना लगे। आजकल वे सभी मिलकर रात को पहरा देते हैं। शुरुआत में केवल आदमी जाग रहे थे, अब महिलाएं भी जागती हैं। मौसमी भी इन्हीं महिलाओं में से एक हैं, जो रात को अपने परिवार की रक्षा करने के लिए आधा पेट खाकर पहरा देती हैं। मौसमी की बेटी, भारत के **सिलीगुड़ी** में है। मौसमी कम से कम इसलिए तो निश्चिंत है कि यह खतरा उसकी बेटी के सिर पर नहीं है। बांग्लादेश में दंगाइयों ने, यदि उन्हें मार भी दिया तो बेटी अनाथ जरूर हो जाएगी, लेकिन फिर भी भारत में जिंदा तो रहेगी।

45 मिनिट में 15 वर्षों के राज का पतन

आदर्श सिंह

साल 1947 में भारी हिंसा और तनाव के बीच भारत के बंटवारे के बाद दो देश बने, जो थे भारत और पाकिस्तान लेकिन इस विभाजन के बाद भी पाकिस्तान के दो टुकड़े हो गए, जो कि पूर्वी पाकिस्तान और पश्चिमी पाकिस्तान थे। यानी आज जिसे हम बांग्लादेश के रूप में जानते हैं। यह कभी अविभाजित भारत का ही हिस्सा था। ये दो हिस्से भी ज्यादा समय तक साथ नहीं रह सके और पाकिस्तान का एक हिस्सा बांग्लादेश बन गया। भारतीय सेना

ने पाकिस्तान को 1971 के युद्ध में हराकर पूर्वी क्षेत्र के बंगालियों को उनका देश दिलाया हालांकि इस विद्रोह की चिंगारी अंदर से ही लगी थी। और इसकी तीन मुख्य वजह थी। पहली वजह भाषा थी। साल 1948 में जब उर्दू को पश्चिमी और पूर्वी पाकिस्तान दोनों की राज्यभाषा बनाया गया तो यह तय हो गया कि सभी सरकारी काम उर्दू में किए जाएंगे। मोहम्मद अली जिन्ना ने उर्दू को बंगालीभाषी पाकिस्तानियों पर थोपते हुए कहा कि वह अब से उर्दू में ही काम-काज करेंगे जो कि तनाव की एक बड़ी वजह बना। दूसरी वजह साल 1970 में भोला चक्रवात था, जिसने पूर्वी पाकिस्तान को तबाह कर दिया, 3 से 5 लाख लोग मारे गए। पश्चिमी पाकिस्तान में बैठी सरकार ने ध्यान नहीं दिया और बंगालियों को भारी संकट से होकर गुजरना पड़ा। और तीसरी मुख्य वजह 1970 में पाकिस्तान के चुनाव परिणाम थे। 1970 के चुनाव परिणामों को स्वीकार नहीं किया गया। इन चुनावों में बांग्लाभाषी पूर्वी पाकिस्तान के नेता शेख मुजीबुर रहमान के नेतृत्व वाली अवामी लीग जीती थी। पूर्वी पाकिस्तान की सत्ता और नेता के स्वीकार्य न होने के कारण विरोध प्रदर्शन बढ़ गए। 7 मार्च 1971 को शेख मुजीबुर रहमान ने एक भाषण दिया कि अगर लोगों के मत को स्वीकार नहीं किया गया तो आने वाले समय में पूर्वी पाकिस्तान अपना अलग मुल्क बनाएगा। बंगाली मुस्लिमों के विद्रोह को कुचलने के लिए पश्चिमी पाकिस्तान ने सेना का इस्तेमाल किया। बड़े पैमाने पर बलात्कार और हत्या की घटनाएं हुई और भारत में लाखों बंगाली लोग भागकर शरण लेने लगे। इस बीच भारत की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने सेना को युद्ध की तैयारी के आदेश दिए। वहीं शेख मुजीबुर रहमान ने बंगाली मुक्ति वाहिनी नाम से लड़ाकों की एक सेना तैयार की थी।

साल 1971 में भारतीय सेना पूर्वी पाकिस्तान के अंदर गई और हार के बादल मंडराते देख 93 हजार पाकिस्तानी सैनिकों ने भारत के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। इसके बाद बांग्लादेश स्वतंत्र देश बना और शेख मुजीब उर रहमान उसके पहले प्रधानमंत्री बने। अगस्त 1975 में रहमान, उनकी पत्नी और उनके तीन बेटों की सैन्य अधिकारियों ने घर में घुसकर हत्या कर दी। हसीना अपनी छोटी बहन शेख रिहाना के साथ भारत में होने के कारण बच गईं। 1981 में हसीना स्वदेश लौटीं और सैन्य शासित देश में लोकतंत्र को लेकर मुखर हो गईं। कई मौकों पर उन्हें नजरबंद भी रखा गया। शेख हसीना 1996 में पहली बार पीएम बनीं हालांकि 2001 के चुनावों में हसीना को सत्ता से बाहर कर दिया गया लेकिन 2008 के चुनावों में भारी जीत के साथ 2009 में प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। हसीना ने पिछले 15 वर्षों में

दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक का नेतृत्व किया और बांग्लादेश में लोगों के जीवन स्तर में सुधार किया लेकिन 2024 में पीएम चुने जाने के छह महीने बाद 1971 में स्वतंत्रता सेनानियों के रिश्तेदारों के लिए सरकारी नौकरियों में 30 फीसदी कोटा देने को लेकर बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए। हिंसा में हजारों लोग मारे गए। पिछले दशकों में बांग्लादेश में सेना की भूमिका बेहद अहम रही। 15 अगस्त 1975 को शेख हसीना के पूरे परिवार की सेना ने हत्या कर दी थी। और 2024 में आर्मी चीफ वकार-उज-जमान जो रिश्ते में शेख हसीना के दामाद लगते हैं उन्होंने खुद शेख हसीना का तख्ता पलट करने में अहम भूमिका निभाई।

शेख हसीना का तख्ता पलट हो जाने के बाद भारत के लिए 5 सबसे बड़ी टेंशन

शेख हसीना सरकार का झुकाव भारत की तरफ था, दोनों देशों के रिश्ते बहुत ही दोस्ताना थे। लेकिन बांग्लादेश की अंतरिम सरकार का झुकाव किसकी तरफ होगा ये कोई नहीं जानता। बांग्लादेश में राजनीतिक अस्थिरता के बीच इस पड़ोसी मुल्क से सटी सीमा की सुरक्षा, चिंता की एक बड़ी वजह है।

हिंदू आबादी पर हमले बढ़े, तो भारत का धर्मसंकट बढ़ेगा

बांग्लादेश में करीब 7 प्रतिशत हिंदू आबादी है। बांग्लादेश में अगर वहां के अल्पसंख्यक हिंदू कट्टरपंथियों के निशाने पर आते हैं, तो यह चिंता की बड़ी वजह होगी। बांग्लादेश में हिंदुओं को निशाना बनाए जाने की खबरें आ रही हैं। मेहरपुर में इस्कॉन मंदिर को निशाना बनाया गया है। इसके अलावा काली मंदिर में भी तोड़फोड़ की जानकारी सामने आ रही है। अगर हिंदू आबादी पर अत्याचार ज्यादा बढ़ता है, तो भारत के लिए दुविधा वाली स्थिति होगी।

मौके की तलाश में चीन-पाकिस्तान!

शेख हसीना सरकार का झुकाव भारत की तरफ था। इससे भारत-बांग्लादेश के रिश्ते बहुत ही दोस्ताना दौर में चल रहे थे। लेकिन अब पिक्चर पूरी तरह से बदल गई है। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार का झुकाव किसकी तरफ होगा यह जगजाहिर है। अंतरिम सरकार में पाक परस्त जमात-ए-इस्लामी की भी एंट्री हो रही है। चीन और पाकिस्तान समर्थक मानी जाने वाली विपक्षी नेता खालिदा जिया की भी रिहाई होने जा रही है, ऐसे में इसका असर भारत-बांग्लादेश रिश्तों पर भी देखा जा सकता है। रक्षा विशेषज्ञ मानते हैं कि बांग्लादेश में चल रही उथल-पुथल में सीधा हाथ पाकिस्तान का होने की संभावना है। हिंसा की पूरी पटकथा पाकिस्तान से ही लिखी गई थी। ऐसे में भारत के लिए नई चिंता खड़ी हो गई है। चीन के लिए भी यह सुनहरा मौका है। तीस्ता समझौते पर जिस तरह से शेख हसीना ने भारत को तरजीह दी थी, उससे वह चिढ़ा हुआ था। लेकिन नई सरकार में शेख हसीना दौर में किए गए समझौतों की समीक्षा हो सकती है। ऐसे में पलड़ा पाकिस्तान और चीन की तरफ झुक सकता है।

कारोबार पर असर!

बांग्लादेश भारत का 25वां सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। दोनों ही देशों के बीच करीब 12.9 अरब डॉलर का कारोबार होता है। वित्त वर्ष 2023-24 में बांग्लादेश 11 अरब डॉलर के साथ भारत का 8वां बड़ा निर्यातक साझेदार रहा है। हालांकि पिछले दो सालों में निर्यात में कमी देखी जा रही है। साल 2021-22 में निर्यात के मामले में बांग्लादेश भारत का चौथा बड़ा इंपोर्ट मार्केट था।

भारतीय निवेश का क्या होगा?

बांग्लादेश में भारत ने बड़ा निवेश किया है। देश के मौजूदा हालात का असर वहां चल रही परियोजनाओं पर भी पड़ने की आशंका जताई जा रही है। जिसकी वजह से निवेशकों के सामने बड़ा खतरा पैदा हो गया है। दरअसल अच्छे रिश्ते होने की वजह से पिछले कुछ सालों में कई बड़ी भारतीय कंपनियों ने बांग्लादेश में खूब निवेश किया है। भारतीय कंपनियों ने वहां पावर, टेक्सटाइल्स, फार्मास्यूटिकल्स जैसे सेक्टरों में निवेश किया है। लेकिन अब हालात बदल गए हैं। ऐसे में निवेश की सुरक्षा को लेकर भी सवाल पैदा होने लगा है, जो भारत के सामने बड़ी चिंता का विषय है।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

सभ्यता का संघर्ष

पीयूष शर्मा

मुझे अपने बचपन की एक बात स्मरण हो आती है, जब घर के बड़ों ने मुझे पेड़ के पत्तों को भी तोड़कर व्यर्थ फेंकने से रोक दिया था। मुझे बताया गया कि पेडों मे भी प्राण होते हैं। जब तक हमें आवश्यकता नहीं हो तब तक पत्ते, शाखा या फूल भी नहीं तोड़ना चाहिए। इस बात ने मेरे बाल मन में, न केवल वनस्पति अपितु प्राणी मात्र के प्रति अपने दायित्वबोध को जन्म दिया।

एक हिंदू परिवार के लिए यह कोई बहुत असामान्य घटना नहीं थी। हमारे परिवारों में ऐसे जीवन मूल्य सहज ही दिखाई दे जाते हैं। इसे हम सनातनी परंपरा कह लें या हिंदू संस्कार, ये नैतिक मूल्य हमारे जीवन मे अनिवार्य प्रवाह की तरह उपस्थित रहते हैं। इसी प्रवाह से निकली जीवन सरिता में प्रेम, करुणा, सेवा, सहायता, रक्षा, शौर्य और पराक्रम जैसे गुणों का विकास भी होता है। ऐसी भावभूमि युक्त, हिन्दुत्व रूपी मानवीय आधार पर खड़े होकर बांग्लादेश मे हो रहे हिंदू नरसंहार के बारे में, मैं सोच भी नहीं पाता हूँ कि कोई मनुष्य इतना क्रुर भी कैसे हो सकता है।

वहाँ से छनकर आने वाले समाचारों और चलचित्रों को देख सुन कर मन विषाद से भर जाता है। एक व्यक्ति जो निर्दोष है, जिससे जुड़ा उसका अपना एक संसार है, उसके सगे संबंधी हैं, उसकी सोच, उसके कार्य, उसके सपने हैं, उसका पूरा अस्तित्व है, उस अस्तित्व को मात्र इसलिए समाप्त कर दिया जाता है, क्योंकि ईश्वर के प्रति उसकी मान्यता अलग है। भला ये भी कोई कारण हुआ, इस सृष्टि के एक महत्वपूर्ण घटक, एक जीवन को समाप्त कर देने का।

मै सोचता रहा,... कहाँ से आती है, इतनी नृशंसता ?

दर्द से कराहते लहूलुहान शरीरों को भीड़ में पीटा गया। चाकू और तलवारों से लोगों के शरीर चीर दिए गए। लोगों को उल्टा लटका कर तब तक पीटा गया, जब तक कि वे मर न गए। हाथ-पैर काटकर, सड़कों पर तड़पने के लिए फेंक दिया गया। जब इससे भी मन न भरा तो उन्हें जिंदा भी जला दिया गया, मात्र इसलिए कि वे एक इस्लामिक बहुल देश में रहने वाले बेचारे हिंदू थे।

क्या इन्हें इनके बड़ों ने, ये न कहा होगा कि विश्व का हर एक प्राण अमूल्य है। हर प्राण में ईश्वर बसता है। शायद नहीं ही, कहा होगा.... अन्यथा निर्दोषों की गर्दन पर उठने से पहले उनके हाथ अवश्य कांप जाते। क्या प्रकृति इन आतताइयों में, कष्ट और परपीड़ा की अनुभूति का भाव डालना ही भूल गई? कैसे मार दिया इन लोगों

ने अपने अंदर का वो मानवीय भाव, जो ये लोग दूसरे को मर्मांतक पीा पहुंचाने से भी संकोच नहीं कर रहे।

यह एक व्यक्ति की बात नहीं है। हजारों, लाखों लोगों का पूरा समाज एक जैसा ही व्यवहार कर रहा है, यह सामान्य नहीं है। ये वर्षों के अभ्यास से ही हो सकता है। यह अंतर व्यक्तिगत नहीं है, यह सभ्यता का अंतर है। वर्षों तक चलकर एक सेयता ही, पूरे समाज के अवचेतन में अपने मूल्य स्थापित कर सकती है।

मेरी सनातन हिंदू सभ्यता ने मुझे मनुष्य का सम्मान करना सिखाया है। मुझे बताया है कि हर प्राणी में ईश्वर का वास है। इसलिए जब भी कभी असावधानी से, किसी अनजान व्यक्ति को भी मेरा पैर लग जाता है तो हाथ बरबस ही क्षमा याचना स्वरूप, उसके चरण स्पर्श को बढ़ जाते हैं। यह प्रक्रिया इतनी तीव्र और सहज होती है कि किसी को कुछ भी असामान्य नहीं लगता, क्योंकि किसी की व्यक्तिगत स्वतंत्रता का सम्मान हमारे अवचेतन में बसा है। ऐसे में किसी स्त्री को उसकी इच्छा के विरुद्ध स्पर्श की कल्पना भी अपराध लगता है। किन्तु ऐसा मन, बांग्लादेश के उन जिहादियों का क्यों नहीं है, जिन्होंने हिंदू स्त्रियों का बलपूर्वक अपहरण किया और सारी सीमाएं तोड़ते हुए उन निर्दोष, निरपराध युवतियों के साथ सामूहिक बलात्कार जैसे घिनौने कृत्य किए। ये कैसी सेयता है जिसने समाज का ऐसा मानस तैयार किया है, जिसकी दृष्टि में अपने मनगढ़त स्वघोषित सत्य के अतिरिक्त बाकी किसी का कोई मोल नहीं है।

यह सभ्यताओं का ही अंतर है। अंतर होना बुरा नहीं है, किन्तु यहाँ यह इतना बड़ा है कि एक ओर तो मानवता खड़ी है, और दूसरी ओर क्रुर और बर्बर पशुता। हमें यह समझना होगा कि हमारा संघर्ष किनसे है? इस संघर्ष में कोमल भावों को विश्राम दे, शिवाजी की भांति शौर्य और पराक्रम के संस्कारों को ही प्रकटाना होगा। यहाँ मुझे परमात्मा श्रीकृष्ण जी की वाणी स्मरण हो आती है - **अहिंसा परमो धर्मः धर्महिंसा तथैव च।**

अराजक और अस्थिर बांग्लादेश और पूर्वोत्तर

अभिषेक अग्रवाल

भारत के पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर, पड़ौसी देश म्यांमार और बांग्लादेश की घटनायें एक-दूसरे से संबंधित हैं। यह सभी घटनायें एक बड़े षड्‌यंत्र का हिस्सा हैं। अमेरिकी सरकार ने बांग्लादेश के राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप किया, लोकतंत्र और स्वतंत्र चुनाव को बढ़ावा देने की आड़ में कई सारे प्रतिबंध लगाए। यह कार्यवाही बांग्लादेश में राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावित करने का एक रणनीतिक हिस्सा है। बांग्लादेशी अधिकारियों ने दावा किया है कि उनके पास बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) के कार्यवाहक प्रमुख और खालिदा जिया के बेटे तारिक रहमान और सऊदी अरब में आईएसआई अधिकारियों के बीच बैठकों के सबूत हैं। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने भी दावा किया था कि बांग्लादेश और म्यांमार के कुछ हिस्सों को काटकर एक नया ईसाई देश बनाने की साजिश रची जा रही है। अमेरिका उनसे एक हवाई पट्टी बनाने की मांग भी कर रहा था। अमेरिका ने बांग्लादेश नेशनल पार्टी और उसके सहयोगी जमात-ए-इस्लामी को भी समर्थन दिया था। जमात-ए-इस्लामी, बांग्लादेश बनने के बाद से ही कई तरह की अस्थिर गतिविधियों में शामिल रहा है और कहीं ना कहीं पाकिस्तान का समर्थक भी है।

बांग्लादेश की सबसे बड़ी समस्या अस्थिरता और अराजकता रही है। बांग्लादेश बनने के बाद से कभी भी सरकार पूर्ण मजबूती के साथ स्थिरता से नहीं चल पाई। मुजीबुर रहमान ने भारत के सहयोग से मुक्ति वाहिनी बनाई और बांग्लादेश का गठन किया। परंतु सेना में गुटबाजी और महत्वाकांक्षाएं होने के कारण वह तीन साल बाद ही लगभग पूरे परिवार सहित सेना द्वारा मार दिए गए। मुजीबुर्रहमान की दो बेटियाँ शेख हसीना और उनकी बहन शेख रिहाना ही बचीं, जो उस समय देश से बाहर थीं। जिया उर रहमान मिलिट्री कमांडर थे, जिन्होंने शेख मुजीबुर्रहमान का आजादी के संग्राम मे साथ दिया। शेख मुजीब की हत्या के बाद उन्होंने देश का शासन संभाला। वही शेख हसीना को बांग्लादेश वापस लेकर आये और उन्हें राजनीति में स्थापित किया। बाद में उन्होंने अपनी पत्नी बेगम खालिदा जिया को भी राजनीति में उतार दिया और 1977 में राष्ट्रपति बन बैठे और चार साल बाद 1981 में उनकी भी सैन्य तख्तापलट में हत्या कर दी गई।

इसके बाद बांग्लादेश के सैन्य प्रमुख मोहम्मद इरशाद ने देश की सत्ता पर कब्जा कर लिया। इरशाद को हटाने के लिए हसीना और जिया दोनों साथ आई और जीत भी हासिल की, परंतु इरशाद के हटने के बाद वे एक-दूसरे के खिलाफ हो गई। खालिदा को शेख हसीना के खिलाफ करने में उस समय सीआईए का बहुत बड़ा हाथ था। वहाँ के कट्टर मुस्लिमों का एक धड़ा पाकिस्तान समर्थक है, जो भारत विरोधी हैं। वहाँ पर अरब देशों से पेट्रो-डॉलर फंडिंग वाले कट्टरपंथी तब्लीगियों का भी अच्छा प्रभाव बनता जा रहा है। जमात-ए-इस्लामी भी विदेशी फंडिंग पाती है, साथ ही वह आईएसआई और सीआईए के संपर्क सहयोग में भी है।

वर्तमान में केवल शेख हसीना ही भारत समर्थक और सहयोगी हैं और अमेरिकन डीप स्टेट को नापसंद है। अब अंतरिम सरकार प्रमुख मोहम्मद यूनुस को बनाया गया है, जिन्होंने 1984 में माइक्रोफाइनेंस स्कीम के नाम पर गरीब बांग्लादेशी नागरिकों को विदेशी पैसे बांटकर उनका दोहन किया। बांग्लादेश की गरीबी में कोई सुधार नहीं आया, परंतु विदेशी धन के माध्यम से बांग्लादेश के लोगों और अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने का प्रयास किया, जिसकी शेख हसीना प्रबल विरोधी हैं। इन पर टैक्स चोरी और अत्यधिक ब्याज से लोगों के दोहन के आरोप लगते रहे, साथ ही यह विदेशी प्रतिनिधित्व के प्रबल समर्थक हैं।

म्यांमार का संघर्ष, राज्य बनाने वाले बर्मी बहुसंख्यकों व अल्पसंख्यकों के मध्य है। अल्पसंख्यक मुख्य रूप से सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थित हैं, जबकि बर्मी देश के मध्य और दक्षिणी हिस्सों पर हैं। कई अल्पसंख्यक समूह प्राकृतिक संसाधनों, जुए, ड्रग्स या विदेशी सहायता (खासकर मिशनरीज़) के माध्यम से खुद को बनाए रखते हैं। वह अक्सर चीनी और अमेरिकन हथियारों की सहायता से संघर्ष को कम तीव्रता पर जारी रखते हैं, जिससे इसकी निरंतरता बनी रहती है। ऐसा करने के पीछे ड्रग्स और जंगल पहाड़ों पर मिलने वाले आर्थिक संसाधन के माध्यम से होने वाली आय भी कारण है।

शेख हसीना, जिस ईसाई-यहूदी लोगों का एक स्वतंत्र राष्ट्र बनाने के प्रयासों की ओर इशारा कर रही थीं, वह वहाँ रहने वाले ईसाई धर्म में परिवर्तित हो चुके समूहों की पुरानी मांग है। ईसाई राष्ट्र **ज़ोगाम**, जिसे **ज़ालेंगम** (स्वतंत्रता की भूमि) की तर्ज पर कहा जाता है, एक प्रस्तावित कुकी राज्य है। इस अलग राष्ट्र में म्यांमार के सागाइंग डिवीजन और चिन राज्य के बड़े हिस्से, भारतीय राज्य मिज़ोरम और मणिपुर के कुकी-बसे हुए इलाके और बांग्लादेश के चटगाँव डिवीजन के बंदरबन जिले और आस-पास के

इलाके शामिल करने का विचार है। अमेरिका समेत यूरोपियन समुदाय इस मांग को हवा देता रहता है और कुकी समुदाय का सहायक भी है।

यह क्षेत्र कुकी-चिन आतंकवादी समूहों के उग्रवाद से जूझ रहा है जिसमे ज़ोमी, चिन-कुकी-मिज़ो जातीय समूह शामिल है। भारत, म्यांमार और बांग्लादेश के पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले एक जातीय समूह हैं। उनकी उत्पत्ति म्यांमार की चिन पहाड़ियों और भारत में मणिपुर, मिज़ोरम और नागालैंड के आस-पास के क्षेत्रों से जुड़ी हुई है। जहाँ वो बाहर से धीरे-धीरे इन क्षेत्रों में प्रवास करके बस गए और अलग-अलग समुदायों का निर्माण किया।

शेख हसीना के साथ सीआईए बांग्लादेश को अमेरिकी सेना के लिए दक्षिण एशिया को नियंत्रित करने के लिए एक सैन्य हवाई पट्टी बनाने में विफल रही। इस सैन्य अड्डे और कुकी चिन के अपने समर्थकों के साथ अमेरिका बहुत आसानी से दक्षिण पूर्व एशिया के साथ भारत और चीन को भी नियंत्रित कर सकता है। यही कारण रहा मणिपुर भी पिछले डेढ़-दो साल से अशांत बना हुआ है।

भारत सरकार ने मणिपुर में अवैध ड्रग्स की खेती पर लगाम लगाई और व्यापार को बंद करने के उद्देश्य से वहाँ फसल को आग लगा दी। इसके बाद ही वहाँ पर चीन और अमेरिका प्रायोजित हिंसा भड़क उठी। सेना की कार्यवाही में कुकी उग्रवादियों की भी काफी कमर टूटी है, इसलिए मणिपुर को अशांत किया गया। वहाँ पर नेहरू ने भारतीय साधुओं के प्रवेश पर रोक लगा दी थी और यूरोपीय मूल के वेरियर एल्विन को उत्तर पूर्वी मामलों पर सलाहकार नियुक्त किया था। आज, नागालैंड में लगभग 90% ईसाई हैं। दूसरी कसर पूर्वोत्तर में इनर लाइन परमिट लगाकर उस हिस्से को भारत से लगभग अलग-थलग कर दिया।

ऐसे समय में भारत की क्या भूमिका होनी चाहिए। मेघालय ने बांग्लादेश के साथ अंतरराष्ट्रीय सीमा पर तत्काल प्रभाव से रात्रि कर्फ्यू लगा दिया है। बीएसएफ ने 4,096 किलोमीटर लंबी भारत-बांग्लादेश सीमा पर अपनी सभी संरचनाओं में **हाई अलर्ट** जारी किया जहाँ एक ओर मणिपुर समस्या है, वहीं चिकन-नेक का स्थाई समाधान भी बांग्लादेश के माध्यम से निकल सकता है। दूसरी ओर त्रिपुरा तथा बांग्लादेशी शरणार्थियों की भी समस्याएँ हैं, जो कि शेख हसीना और उनके नेटवर्क के माध्यम से सुलझ सकती हैं।

बांग्लादेश मे हिंदुओं पर अत्याचार की सत्य कथा - 4

बांग्लादेश के सतखीरा जिले के ताला कस्बे में एक 35 वर्षीय हिंदू युवती सुनयना (परिवर्तित नाम) अपने घर में निश्चिंत होकर अपना काम कर रही थी। उसे कहां पता था, कि अगले 2 घंटे उसके लिए जिंदगी भर का दुख बनकर आने वाले हैं।

पांच अगस्त की शाम सात बजे का समय था। बांग्लादेश में तख्तापलट हो चुका था। पूरे देश में हिंदुओं के ऊपर इस्लामी जेहादी, टोलियां बनाकर आक्रमण कर रहे थे। सुनयना के पति बीमार थे और वह पास ही के एक अस्पताल में भर्ती थे। सुनयना अपने घर पर अकेली थी। बाहर की घटनाओं से अनभिज्ञ, सुनयना दरवाजा लगाकर घर में काम कर रही थी, तभी अचानक एक भयंकर शोर ने उसका ध्यान अपनी ओर खींचा। उसने खिड़की से झांक कर देखा, तो लोग हाथों में लाठी-डंडे लिए उसके घर की ओर दौड़ते चले आ रहे थे। वह कुछ समझ पाती उसके पहले ही **अल्लाह हू अकबर** के नारे लगाते हुए लोग उसके दरवाजे को पीटने लगे। वह खिड़की बंद करने के लिए दौड़ी, लेकिन तब तक खिड़की से कूद करके कुछ लोग उसके घर में घुस चुके थे। उधर दरवाजे पर भी इतनी जोर से प्रहार किया गया कि वह भी टूटकर नीचे जा गिरा। दंगाइयों की एक भीड़ सुनयना के घर के अंदर आ चुकी थी। यह दृश्य देख उसका चेहरा पीला पड़ चुका था। आने वाले संकट को जान कर वह अंदर तक आक्रांत हो चुकी थी। दंगाइयों की इस भीड़ ने सबसे पहले तो उस गरीब के घर को लूटा। एक संदूक में कुछ कीमती वस्तुएं रखी हुई थीं, उसे तोड़कर अपने कब्जे में कर लिया।

उसके बाद शुरू हुआ हैवानियत का नंगा नाच। उन्होंने सुनयना को जबरदस्ती उठाया और पास ही बनी गौशाला के पीछे ले गए। वहां इस्लामी जिहादी कट्टरपंथियों की उस भीड़ ने बारी-बारी से उसके साथ वह कुकृत्य किया, जिसकी यादें उसकी हर सांस के साथ उसे जीवन भर सालती रहेंगी। सुनयना अभी जिंदा है, उस न्याय की आस में, जो उसे अभी के बांग्लादेश में तो शायद कभी नहीं मिल सकेगा।

बांग्लादेशी हिन्दुओं की करूण गाथा

डॉ. सुब्रतो गुहा

जिस हिन्दू का खून न खौले, खून नहीं वह पानी है।

दिनांक पाँच अगस्त 2024 को जैसे ही जनवरी 2024 के चुनाव में लोकतांत्रिक पद्धति से चौथी बार प्रधानमंत्री चुनी गई शेख हसीना वाजेद को इस्तीफा देकर भारत में शरण लेने हेतु मजबूर होना पड़ा - वैसे ही समूचे बांग्लादेश में अराजकता फैल गई। पाँच अगस्त से पूर्व के तीन सप्ताह में समूचे बांग्लादेश में आरक्षण विरोधी तथाकथित छात्र आदांलेन चलता रहा -'जिसमें आंदोलनरत छात्रों से कई गुना अधिक सेंया में इस्लामी कट्टरपंथी बांग्लादेशी नेशनलिस्ट पार्टी, जमात-ए-इस्लामी, इस्लामी छात्र शिविर, हिफाजत-ए-इस्लाम इत्यादि इस्लामी कट्टरपंथी और जिहादी तत्व शामिल थे। तथाकथित छात्र आंदोलन के नाम पर तीन सप्ताह चले इस उग्र जिहादी हिंसक आंदोलन को बांग्लादेशी सेना एवं पुलिस के अनेक जिहादी तत्वों का सक्रिय सहयोग मिलने से स्थिति इतनी असहनीय हो गई कि अन्ततः मजबूरन प्रधानमंत्री शेख हसीना वाजेद को इस्तीफा देकर भारत पलायन करना पड़ा।

यह स्वाभाविक था कि बांग्लादेश के इस्लामी कट्टरपंथियों एवं जिहादियों ने प्रधानमंत्री शेख हसीना के तख्तापलट को अपने जिहादी अभियान की विजय माना और शेख हसीना की अवामी लीग पार्टी के पदाधिकारियों और हिन्दू अल्पसंख्यकों पर टूट पड़े। बांग्लादेश के प्रसिद्ध संगठन **बांग्लादेश हिन्दू, बौद्ध, ईसाई परिषद** ने अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया को जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि बांग्लादेश के कुल चौंसठ जिलों में से बावन जिलों में हिन्दू अल्पसंख्यकों पर बड़े पैमाने पर अमानवीय अत्याचार किए गए, जो अभी भी जारी हैं। हिन्दुओं के घरों, दुकानों, मन्दिरों, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों इत्यादि में जमकर तोड़-फोड़ और आगजनी की गई। हिन्दू माताओं, बहनों, बेटियों को उनके घरों से बलपूर्वक उठवाकर सामूहिक बलात्कार के बाद काटकर फेंक दिया गया। छोटी-छोटी हिन्दू बालिकाओं तक को नहीं छोड़ा गया। हिन्दू पुरुषों की पेन्ट उतरवा कर, यह जाँचकर कि उनका खतना नहीं हुआ है, उन्हें मारकर या तो काटकर छोटे-छोटे टुकड़े फेंक दिए गए या फिर मारकर रस्सी से पेड़ों पर या चौराहों पर लटका दिए गए। ऐसी अनेक घटनाओं के फोटो एवं वीडियो हमने टेलीविजन चैनलों के समाचारों में देखा है।

कैसी विडम्बना है कि **सारे विश्व की आँखें गाजा पर** तथा **मुस्लिम लाइव्ज़ मैटर** अर्थात **मुस्लिम प्राणों का मूल्य है-** जैसे देश-विदेश में अभियान चलाने वाले सेकुलर सूरमाओं को भारत से हजारों मील दूर फिलीस्तिनी मुस्लिमों की कराह तो सुनाई देती है, परन्तु भारत के पड़ौसी बांग्लादेश में निरपराध हिन्दू नर-नारियों एवं शिशुओं के हाहाकार के स्वर सुनाई नहीं देते। सन् 1971 में जब पाकिस्तान के दो टुकड़े हुए, तब पूर्वी पाकिस्तान बांग्लादेश बन गया, जिसकी हिन्दू जनसंख्या बाईस प्रतिशत थी जो अब नरसंहार, पलायन या बलपूर्वक धर्मान्तरण के फलस्वरूप केवल सात प्रतिशत रह गई है। बांग्लादेश के कई प्रसिद्ध पत्रकारों एवं लेखकों ने शोधपरक आलेखों में बताया है कि सन 2040 तक बांग्लादेश में हिन्दू जनसंख्या शून्य तक पहुंच जाएगी, जैसी स्थिति आज अफगानिस्तान में है।

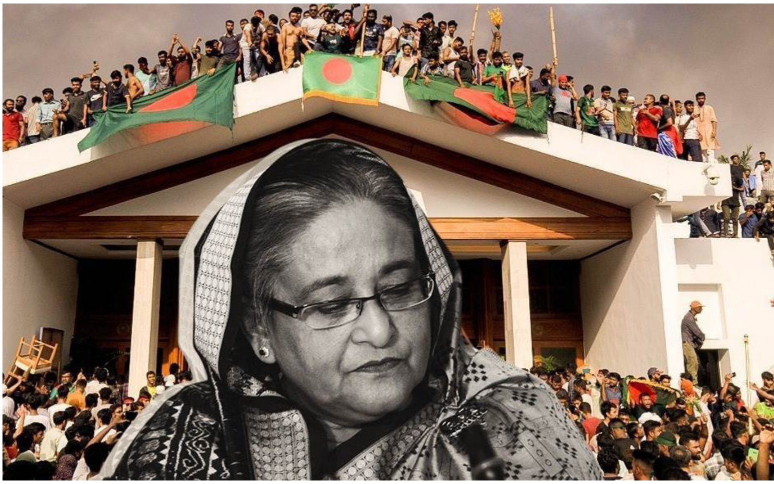

एक विचारणीय तथ्य यह भी है कि 14 अगस्त 1947 में पाकिस्तान के जन्म के समय जोगेन्द्रनाथ मंडल पूर्वी भारत के सर्वाधिक प्रभावशाली अनूसूचित जाति के नेता थे। जब अखण्ड भारत में 1947 से पूर्व मोहम्मद अली जिन्ना की मुस्लिम लीग पार्टी स्वतंत्र पाकिस्तान की मांग करते हुए संघर्ष कर रही थी तब जोगेन्द्र मंडल मुस्लिम लीग के समर्थन में कूद गए एवं अपने अनुसूचित जाति-जनजाति के अनुयायियों से आह्वान किया कि सवर्ण जाति के हिन्दू उनके दुश्मन हैं जबकि मुस्लिम उनके मित्र एवं हितैषी हैं, इसलिए मुस्लिमों को ही हमें समर्थन देना है। गाँव-गाँव, शहर-शहर घूमकर जोगेन्द्रनाथ मण्डल ने यह संदेश अनुसूचित जाति-जनजाति

के नर-नारियों को दिया। 14 अगस्त 1947 को जब पाकिस्तान स्वतंत्र हुआ, तब मुस्लिम लीग के पक्ष में किए कार्यों के पुरस्कार स्वरूप जोगेन्द्रनाथ मंडल को प्रधानमंत्री लियाकत अली खान के मंत्रिमंडल में दो कैबिनेट मंत्री का पद दिये गये - श्रम मंत्रालय एवं कपड़ा मंत्रालय। परन्तु केवल ढाई वर्ष बाद यह देखकर कि केबिनेट मंत्री होते हुए भी उनके घर की बहू-बेटियां जिहादियों से सुरक्षित नहीं हैं - जोगेन्द्रनाथ मण्डल भागकर भारत के कोलकाता आ गए और 1968 में अपनी मृत्यु तक यहीं रहे। परन्तु उनके भरोसे जो करोड़ों अनुसूचित जाति-जनजातियों के नर-नारी पश्चिमी और पूर्वी पाकिस्तान में बस गए थे, जोगेन्द्रनाथ मंडल उन्हें वहीं जिहादी भेडियों के हवाले छोड़ आए।

यही कारण है कि आज पाकिस्तान की कुल दो प्रतिशत हिन्दू अल्पसंख्यक जनसंख्या में से अस्सी प्रतिशत नर-नारी अनुसूचित जाति-जनजाति के हैं। बांग्लादेश की सात प्रतिशत हिन्दू अल्पसंख्यक जनसंख्या में नब्बे प्रतिशत नर-नारी अनुसूचित जाति-जनजाति के हैं। ऐसी स्थिति में सवाल उठता है कि पाकिस्तान व बांग्लादेश में हिन्दू उत्पीड़न अर्थात् अनुसूचित जाति-जनजाति पर मुस्लिम कट्टरपंथियों के अमानवीय अत्याचारों की स्थिति में **जय भीम-जय मीम** का नारा लगाने वाले सेकुलर झंडाबरदार मौन क्यों है? अभी कुछ माह पूर्व भारत के सभी समाचार पत्रों में एक शोधपरक तथ्यों पर आधारित रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी कि 1950 से 2015 के बीच भारत में हिन्दू जनसंया आठ प्रतिशत घटी और मुस्लिम जनसंख्या 43% बढ़ी और 2040 तक भारत मुस्लिम बहुसंख्यकों वाला इस्लामी देश बन जाएगा। तब भारत के हिन्दू समाज को आज के पाकिस्तान व बांग्लादेश के अल्पसंयक हिन्दुओं जैसा ही अत्याचार भोगना पड़ेगा। इसलिए जागो और जगाओ, क्योंकि **'जब जागो-तब सवेरा।**

"तुम्हारा हक जब छीने कोई उस वक्त को, आँख से आँसू नहीं, शोला निकलना चाहिए।

कावड़ यात्राओं ने दिया समरसता का संदेश -

गत श्रावण मास में, मालवा-निमाड़ क्षेत्र भगवान शंकर की भक्ति मे डूबा रहा। क्षेत्र को माँ नर्मदा और माँ क्षिप्रा का आशीर्वाद प्राप्त है, जिनके तट पर अनेक शिवालय स्थित हैं। मालवा-निमाड़ की धरती को दो ज्योतिर्लिंग, ममलेश्वर और महाकालेश्वर के होने का सौभाग्य प्राप्त है तो वहीं मंदसौर के पशुपतिनाथ का माहात्म्य सर्वज्ञात है। इनके अलावा भी ग्राम-ग्राम में नवीन एवं प्राचीन शिव मंदिर बने हुए हैं। पूरे श्रावण भर इन स्थानों पर शिव भक्तों की धूमधाम रही। कावड़ यात्राओं के माध्यम से, भक्तों ने पवित्र स्थानों का जल ले जाकर, शिवजी का अभिषेक किया। अनेक कावड़ यात्राओं के माध्यम से लाखों कावड़िए, शिव भक्ति में सराबोर हुए। धार जिले मे **माँ शबरी के राम** कावड़ यात्रा में सकल हिंदू समाज ने पूर्ण उत्साह के साथ भाग लिया। झाबुआ में शिवगंगा ने 22 गांवों की कावड़ यात्रा निकालकर अभूतपूर्व दृश्य उत्पन्न कर दिया। जनजाति समाज की उल्लेखनीय उपस्थिति के साथ ही हजारों की संख्या मे हिंदू समाज ने इस कावड़ यात्रा में भाग लिया। मनावर और धरमपुरी में भी **सामाजिक समरसता** कावड़ यात्रा निकाली गई। खंडवा में मातृशक्ति जब हाथों में भगवा पताका लिए कावड़ यात्रा में सम्मिलित हुई, तो मानो आँखों के सामने बरबस ही हिंदू राष्ट्र का चित्र बन आया था। इंदौर की कावड़ यात्रा में श्री गुटकेश्वर महादेव, शाही पालकी में निकले। इंदौर में मातृशक्ति ने भी अपनी कावड़ यात्रा निकाली जिसमें बड़ी संख्या में महिलाएं सम्मिलित हुई। सेवा भारती के द्वारा पेटलावाद में निकाली गई कावड़ यात्रा में, जनजाति समाज ने अभूतपूर्व उत्साह के साथ भाग लिया और भगवान शंकर का अर्चन किया।

क्षेत्र के लगभग सभी स्थानों पर कावड़ यात्राओं का आयोजन हुआ, जिनमें सकल हिंदू समाज ने अपनी उपस्थिति सुनिश्चित की। प्रत्येक जाति, वर्ग, समाज के सम्मिलित होने से ये सभी कावड़ यात्राएं हिंदू समाज में समरसता का अनूठा उदाहरण बन गई।

हमारी अपनी भाषा : हिन्दी

अदिति माहेश्वरी

हमें गर्व है कि हम हिंदुस्तानी हैं और हमारी मातृभाषा हिन्दी है। विश्व की प्रमुख भाषाओं में हिंदी का मुख्य स्थान है।

❖ भाषा ही है विकास की सारथी

भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है। भाषा लोगों को आपस में जोड़ने का सबसे सरल और जरूरी माध्यम है। मानव जाति अपने सृजन से ही स्वयं को अभिव्यक्त करने के तरह-तरह के माध्यम खोजती रही है। आपसी संकेतों के सहारे एक-दूसरे को समझने की यह कोशिशें अभिव्यक्ति के सर्वोच्च शिखर पर तब पहुँच गयी जब भाषा का विकास हुआ।

❖ हिंदी भाषा का महत्व

हिंदी को भारत की पहचान के तौर पर देखा जा सकता है। हालांकि भारत समेत कई अन्य देशों में हिंदी भाषा बोली जाती है। यह जानकर बेहद प्रसन्नता होगी कि हिंदी दुनिया मे सबसे अधिक बोले जाने वाली 5 प्रमुख भाषा मे से एक है।

❖ सिंधु से हुई हिंदी शब्द की उत्पत्ति

हिंदी शब्द की उत्पत्ति सिंधु शब्द से हुई है, यहां सिंधु का आशय सिंधु नदी से है। जब इरानी लोग भारत आये, तब उन्होंने सिंधु नदी के आसपास रहने वाले लोगो को हिन्दू कहा क्योंकि इरानी भाषा में **स** को **ह** और **ध** को **द** कहते हैं। इस तरह यह सिंधु से हिन्दू बना और हिन्दू से हिंदी।

❖ क्यों मनाया जाता है हिंदी दिवस?

भारत के अधिकतर क्षेत्रों में ज्यादातर हिंदी भाषा बोली जाती है तथा हिंदी को प्रत्येक क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए हिंदी दिवस मनाया जाता है।

❖ कब मनाते हैं हिंदी दिवस?

बता दें कि हिंदी दिवस साल में एक बार नहीं बल्कि दो बार मनाया जाता है। हर साल 10 जनवरी और 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के अवसर पर देश दुनिया में कई कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। 14 सितम्बर को पूरे भारत मे राष्ट्रीय हिंदी दिवस मनाया जाता है, वहीं हर साल 10 जनवरी को पूरी दुनिया में विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है।

❖ 14 सितम्बर को क्यों मनाया जाता है हिंदी दिवस?

हिंदी भाषा को मान्यता देते हुए 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को देश की आधिकारिक भाषा का दर्जा दिया था। यहां पर एक तथ्य यह भी है कि 14 सितम्बर को ही राजेंद्र सिन्हा का जन्मदिवस भी आता है, जिन्होंने हिंदी को राजभाषा बनाने के लिए काफी परिश्रम किया।

❖ 10 जनवरी को क्यों मनाते हैं हिंदी दिवस?

विश्व हिंदी दिवस को मनाने का उद्देश्य हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए वैश्विक स्तर पर इसे एक अंतराष्ट्रीय भाषा के रूप में प्रस्तुत करना। 10 जनवरी का दिन इसलिए चुना गया कि 1975 में इसी दिन नागपुर में पहली बार विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया था।

एक विनती सभी भारतवासियों से कि सिर्फ दिवस मनाने से कुछ नहीं होता आज की युवा पीढ़ी हिंदी से दूर होती जा रही है। हम आज दिनचर्या में भी अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करने लगे हैं। लेकिन हिंदी सिर्फ एक भाषा नहीं, संस्कृति भी है। हम पचास भाषाएं सीखें अच्छी बात है, लेकिन हमें मातृभाषा को नहीं भूलना चाहिये। इसलिये एक विनती सरकार से, विपक्ष से, युवा से, भारत की पूरी 140 करोड़ आबादी से कि हिंदी को राष्ट्रीय भाषा का स्थान मिलना ही चाहिए। और यह स्थान हम सभी के सहयोग से ही मिलेगा।

हिंदी दिवस पर हमने ठाना है,
लोगों में हिंदी का स्वाभिमान जगाना है, हम सबका अभिमान है हिंदी,
भारत देश की शान है हिंदी

भूतिया बुजुर्ग उदय से हुआ प्रभात ग्राम

देवास जिले का भूतिया बुजुर्ग ग्राम संघ कार्य की दृष्टि से एक प्रगत ग्राम है। यहां संघ की शाखा सन् 1940 से प्रारंभ हुई। ग्राम की जनसंेया 2000 है एवं 16 समाज के लोग ग्राम में निवास करते हैं। 8 वीं कक्षा तक एक सरस्वती विद्यालय भी संचालित है, 300 सूचीबद्ध स्वयंवसेवक हैं। ग्राम विकास गतिविधि की दृष्टि से अनेक वर्षों से यह उदय ग्राम की श्रेणी में था, संघ की शाखा एवं सरस्वती विद्यालय के कारण ग्राम में संस्कार एवं संगठन का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है।

ग्राम विकास समिति की सक्रिय भूमिका के कारण ग्राम विकास के सभी 7 आयामों पर यहां अच्छा कार्य दिखाई पड़ता है। ग्राम में सभी मंदिरों एवं उत्सवों में सभी समाज जनों की सक्रिय सहभागिता बिना किसी भेदभाव के होती है। ग्राम में विवाद एवं आपसी मतभेदों की कोई घटना देखने मे नहीं आती है। ग्राम में कृषि के साथ अनेक ग्राम आधारित कार्य जैसे दूध उत्पादन, फसल भंडारण, फसलों के मूल्य वर्धन आदि का कार्य ग्राम स्वावलंबन एवं ग्राम की अर्थव्यवस्था को शक्ति प्रदान करते हैं। ग्राम से कोई भी स्थाई पलायन विगत अनेक वर्षों में नहीं हुआ है। ग्राम में अनेक संयुक्त परिवार हैं जिनमें चार पीढ़ियों के लोग एक साथ आनंद पूर्वक जीवन जी रहे हैं।

भूतिया बुजुर्ग एक संस्कारित, संगठित एवं संपन्न ग्राम है यहाँ संघ के सभी छ- उत्सव एवं ग्राम विकास के भूमि सुपोषण कार्यक्रम ग्राम सभा, ग्राम समिति की मासिक बैठक नियमित रूप से होती हैं। ग्राम समिति में 18 सदस्य हैं तथा ग्राम विकास के सभी 7 आयामों के लिए कार्यकर्ता नियोजित किए गए हैं। ग्राम समिति एवं ग्राम सज्जन शक्ति की सार्थक उपस्थिति में मालवा प्रांत के माननीय प्रांत संघ चालक डॉक्टर प्रकाश जी शास्त्री ने ग्रामवासियों से ग्राम संपूर्ण वर्णन सुनने की पश्चात् 17 जुलाई को 35 ग्रामवासी एवं कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में अपने प्रवास के समय भूतिया बुजुर्ग ग्राम को ÷प्रभात ग्राम÷ घोषित किया और साथ ही प्रभात ग्राम से भविष्य में दर्शनीय ग्राम बन सके इसके लिए सभी ग्रामजनों को संकल्प दिलाया। इस प्रकार से देवास विभाग में 6 प्रभात ग्राम एवं प्रांत में 29 प्रभात ग्राम हो गए हैं।

समिति के संयोजक श्री श्याम लाल जी राणा ने प्रभात ग्राम बनने पर अत्यंत हर्ष व्यक्त करते हुए सभी उपस्थित जनों का धन्यवाद किया एवं प्रभात ग्राम बनाए रखने के लिए हमेशा पूर्ण समर्पण भाव के साथ कार्य करने का समिति के साथ संकल्प लिया। अंत में प्रभात ग्राम की वार्षिक कार्य योजना ग्राम समिति द्वारा प्रांत संयोजक, विभाग सह संयोजक तथा जिला कार्यवाह जी के मार्गदर्शन में तैयार की गई।

बांग्लादेश हिन्दू नरसंहार

SAVE
HINDU
SAVE HINDUS
IN BANGLADESH
STOP
Organized by:

JUSTICE DELAYED
IS
JUSTICE DENIED
Justice
Justice
Mercy
STOP
RAPE
WE WANT JUSTICE
R.G.KAR

STOP
Violence Against
Women
We Want
Justice
Hang The Rapist
We Want
Justice
PUNISH
THE RAPIST
ON DUTY
FEMALE DOCTOR RAPED
AND MURDERED
JUSTICE
FOR VICTIM
Hands that Heal
should not
BLEED
NO MERCY
TO
RAPIST
WE DEMAND

बांग्लादेश तख्ता पलट का भयावह दृश्य,
मानवीय मूल्यों के विपरीत,
वैश्विक जगत के लिए चिंता की लकीर...

अक्टूबर माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. 03 शारदीय नवरात्रारंभ
ता. 11 दुर्गाष्टमी, महाष्टमी व्रत
ता. 12 विजयादशमी, दशहरा
ता. 20 करवा चौथ व्रत
ता. 29 धनतेरस, प्रदोष व्रत
ता. 31 दीपावली, लक्ष्मी कुबेर पूजा

बुक-पोस्ट

जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11डी, पोलोग्राउण्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं अर्चना भवन, 76 रामबाग, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731-3551341